# MP Board Class 8th General English Notes Chapter 13 Virtue Pays

**Virtue Pays Summary**

1. Once when the Pandavas, were wandering in the forest, they felt very thirsty. But nowhere could they find water. They began to feel that they would die of thirst. The eldest brother Yudhishthira, a man of truth, then said to his half-brother. Nakula, "O! Nakula, son of Madri, climb that tree and look all over the forest and see if there is some water near by; look if there are trees, birds or plants, for they are sure signs of water." Nakula climbed the tree and saw some plants and greenery at a distance. It appeared as if there was a pool. "Go then Nakula." said Yudhishthira, "and bring some water for your brothers."

अनुवाद:
एक बार जब पांडव जंगल में घूम रहे थे, उन्हें बहुत प्यास लगी। लेकिन उन्हें कहीं पानी नहीं मिला। उन्हें ऐसा लगा कि वे प्यास से मर जायेंगे। सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर, एक सत्यवादी व्यक्ति ने अपने सौतेले भ्राता नकुल से कहा, ओ! नकुल, माद्री के पुत्र, उस पेड़ पर चढ़ जाओ और जंगल के चारों ओर देखो कि कहीं पास ही कुछ पानी है, देखो, कहीं पेड़, या पक्षी है क्योंकि वे पानी होने के चिह्न हैं। नकुल पेड़ पर चढ़ गया और उसने कुछ दूरी पर कुछ पौधे और हरियाली देखी। ऐसा प्रतीत होता था कि वहाँ पर एक तालाब था।"तब जाओ नकुल।"युधिष्ठिर ने कहा, "और अपने भाइयों के लिए थोड़ा पानी ले आओ।"

2. Nakula set out towards the place and came across a pool of clean water. No sooner did he bend to drink the water than a strong voice cried, "Stop ! Do not drink the water till you have obeyed the laws of this pool. No one can drink its water till he has answered the questions I ask.

If you take even a drop of water before this, you may die at once." Nakula paid no heed to the voice. He had hardly touched the water when he fell dead among the weeds growing near the pond. Yudhishthira and his brothers waited for hours for Nakula but he did not return. Then Yudhishthira sent Sahadeva to find out his brother's whereabouts.

अनुवाद:
नकुल उस स्थान की ओर चल पड़ा और स्वच्छ पानी के एक जलाशय के पास आ गया। जैसे ही वह पानी पीने नीचे झुका, तभी एक शक्तिशाली आवाज आई,"रुको! जब तक तुम इस जलाशय के नियमों का पालन नहीं कर लेते तब तक पानी मत पियो। कोई भी इस जलाशय का पानी तब तक नहीं पी सकता जब तक मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे देता।

यदि इससे पहले तुमने एक भी बूंद पानी लिया तो तुम तुरन्त मर जाओगे।" नकुल ने आवाज की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने पानी को छुआ ही था कि वह जलाशय के निकट उसी खरपतवार पर गिरकर मर गया। । युधिष्ठिर और उनके भाईयों ने नकुल की कई घण्टों तक प्रतीक्षा की परन्तु वह नहीं लौटा। तब युधिष्ठिर ने सहदेव को अपने भाई का पता लगाने के लिए भेजा।

3. When Sahadeva reached the pool he saw Nakula lying dead there. He felt very much grieved. He could not weep for his dead brother as his thirst had overpowered his emotions. He knelt down to drink water instead. “Wait,” cried the voice, “Do not take even one drop of this water until you have answered my questions; if you do so, you will die.” The prince did not care for the voice and stopped to drink water.

He had hardly drunk a little water when he also fell dead. When Sahadeva also failed to return, Yudhishthira sent Arjuna and then Bhima. But both met the same fate. Ultimately Yudhishthira himself went to the pool. The strange voice cried, “Stop, unless you answer my questions before drinking water you will also die like your brothers. Such is the law of this place.”

अनुवाद:
जब सहदेव तालाब पर पहुँचा तो उसने नकुल को वहाँ मृत पड़े हुए देखा। उसे अत्यन्त दुःख हुआ। वह अपने मृत भाई के लिए रो भी न पाया क्योंकि प्यास उसकी भावनाओं पर हावी हो चुकी थी। इसके बजाय वह पानी पीने के लिए नीचे झुका। रुको, “आवाज आई,” जब तक तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे देते हो तुम इस जल की एक बूंद भी नहीं ले सकते हो; यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।”
राजकुमार ने आवाज की परवाह न की और पानी पीने के लिए नीचे झुका। उसने मुश्किल से थोड़ा सा ही पानी पिया था कि वह भी मृत होकर गिर पड़ा। जब सहदेव भी नहीं लौटा तो युधिष्ठिर ने अर्जुन और फिर भीम को भेजा। परन्तु उन दोनों का भी वही हाल हुआ। अन्त में युधिष्ठिर स्वयं जलाशय पर गये। उस अजीब सी आवाज ने कहा, “रुको, जब तक पानी पीने से पहले तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे देते तुम भी अपने भाइयों की तरह मृत हो जाओगे। ऐसा यहाँ का नियम है।

4. It appeared to Yudhishthira as if it was the
voice of some divine power. So he said, “Before
I answer your questions, pray tell me who you
are ! Surely you must be from the other world.” “Yes, you are right”, said the spirit. “I am Yaksha, the spirit of the woods. I rule over this region. I have made a rule that anyone who wants to drink the water of this pool must first answer my questions or he shall die at once.” “Ask your questions,” said Yudhishthira, “I shall answer them to the best of my ability.” Then

Yaksha asked his questions.
Yaksha : Which is the best road to Heaven ?
Yudhishthira : Virtue is the best road to Heaven

अनुवाद:
युधिष्ठिर को ऐसा लगा कि जैसे यह किसी दैवीय शक्ति की आवाज है. इसीलिए उसने कहा, “इससे पहले कि मैं आपके प्रश्नों के उत्तर दूँ, मेरी प्रार्थना है कि मुझे यह बताएँ कि आप कौन हैं ? अवश्य ही आप किसी अन्य संसार से हैं।” हाँ, तुम सही हो”, प्रेत ने कहा! “मैं यक्ष हूँ, जंगल का प्रेत इस जंगल पर मेरा शासन है। मैंने यह नियम बनाया है कि जो भी इस तालाब के पानी को पीना चाहता है उसे पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर देना होगा। अन्यथा वह तुरन्त मर जाएगा।” “अपने प्रश्न पूछे”, युधिष्ठिर ने कहा, “मैं अपनी पूर्ण योग्यतानुसार उनके उत्तर दूंगा।” तब यक्ष ने अपने प्रश्न पूछे। यक्ष – स्वर्ग के लिए सबसे उत्तम मार्ग कौन-सा है ? युधिष्ठिर स्वर्ग के लिए सबसे उत्तम मार्ग सद्गुण है।

https://www.evidyarthi.in/

5. Yaksha : Which is the best of virtues ?
Yudhishthira : The best virtue is to hate none.
Yaksha : Which is the worst enemy of man ?
Yudhishthira : Anger is the worst enemy of man.
Yaksha : Which man is rich and poor at the same time?
Yudhishthira : The man who has much butegives nothing.
Yaksha : How may a poor man become rich ?
Yudhbishthira : A poor man may become rich by being content.
Yaksha : What is heavier than the earth and the clouds ?
Yudhishthira : The love of parents. Yaksha : What is the way to be happy ? Yudhishthira : To tell the truth and be kind. Yaksha : Who is the greatest man of all ?
Yudhishthira : One who is unaffected by joy and sorrow.

अनुवाद:
यक्ष सर्वश्रेष्ठ सद्‌गुण कौन – सा है ?
युधिष्ठिर – किसी से भी घृणा न करना सर्वश्रेष्ठ सद्‌गुण है।
यक्ष – मनुष्य का सबसे बुरा शत्रु कौन है ? युधिष्ठिर क्रोध मनुष्य का सबसे बुरा शत्रु है।
यक्ष – कौन-सा मनुष्य एक साथ गरीब और धनी है ?
युधिष्ठिर – वह व्यक्ति जिसके पास बहुत है परन्तु किसी को देता कुछ नहीं है।
यक्ष – एक गरीब व्यक्ति धनी कैसे बन सकता है ?
युधिष्ठिर – एक गरीब व्यक्ति संतोषी होकर धनी बन सकता है।
यक्ष पृथ्वी और बादलों से क्या भारी है ? युधिष्ठिर – माता – पिता का प्रेम।
यक्ष – प्रसन्न रहने का क्या तरीका है ? युधिष्ठिर सत्य बोलना और दया करना। यक्ष सबसे महान् व्यक्ति कौन है ?
युधिष्ठिर वह, जो सुख एवं दुःख से अप्रभावित हो।

6. Then said Yaksha, “O! Prince, you have answered my questions very well. Now you may drink the water. I also give you a boon. Name anyone of your brothers whom I may bring to life again.” Yudhishthira said, “LetNakula, the son of Madri, be brought to life.” “But he is

only your half-brother,” said Yaksha “Don’t you want your real brothers Bhima and Arjuna to live again ? Don’t you love them ?” “Yes I love them,” said Yudhishthira. “But I wish that Nakula should come back to life.’

अनुवाद:
हो। मैं तुमको एक वरदान भी देता हूँ। किसी भी अपने एक भाई का नाम बताओ जिसे मैं पुनर्जीवित कर दूं।”.
युधिष्ठिर ने कहा, “माद्री का पुत्र नकुल पुनः जीवित हो जाए।””लेकिन वह तो तुम्हारा सौतेला भाई है।” यक्ष ने कहा, “क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे सगे भाई भीम और अर्जुन पुनः जीवित हो जाएँ ? क्या तुम्हें उनसे प्रेम नहीं है ?”
“हाँ, मुझे उनसे प्रेम है,” युधिष्ठिर ने कहा, “लेकिन मेरी इच्छा है कि नकुल पुनः जीवित हो जाए।”

7. “Why ?” asked the Yaksha. Yudhishthira replied, “I am the son of Kunti and Nakul is the son of Madri. Please bring back Nakul to life so that one son of each mother remains alive.”. Yudhishthira had hardly spoken these words when Yaksha said, “O ! Prince, I am Dharma, the God of Justice. I wished to know if you were just. I find that you are really so. I am highly pleased and shall bring all your brothers to life.” Yaksha sprinkled some drops of water on the dead bodies of the four brothers and they came back to life.

अनुवाद:
“क्यों,” यक्ष ने पूछ। युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, “मैं कुन्ती का पुत्र हूँ और नकुल माद्री का पुत्र है। कृपया नकुल को पुनर्जीवित कर दें जिससे। प्रत्येक माता का एक-एक पुत्र जीवित रहे। युधिष्ठिर ने मुश्किल से इतना ही कहा था कि यक्ष ने कहा, “ओ ! राजकुमार, मैं धर्म हैं न्याय का देवता। मैं जानना चाहता था कि तुम न्यायी हो। मैंने देखा कि तुम वास्तव में ऐसे ही हो। मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँ और तुम्हारे सभी भाइयों को पुनर्जीवित कर दूंगा। यक्ष ने चारों भाइयों के मृत शरीरों पर पानी की कुछ बूंदें छिड़की और वे जीवित हो गये। “व्हाइ ?”ऑस्क्ड द यक्ष. तब यक्ष ने कहा, “ओ राजकुमार, तुमने मेरे प्रश्नों के उत्तर अत्यन्त अच्छी प्रकार से दिये हैं। अब तुम पानी पी सकते

https://www.evidyarthi.in/